



## गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

स्वतन्त्रता के ७५वें अमृत महोत्सव

एवं

महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जयन्ती

के पावन अवसर पर

**वेद-विज्ञान एवं संस्कृति महाकुम्भ**

अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी-चतुर्दशी वि. २०८०

23 - 25 दिसम्बर, 2023

**वेबसाईट:** <https://www.gkv.ac.in/vvsmahakumbh/>

**डॉ. सत्यपाल सिंह**

संरक्षक

**प्रो. सोमदेव शतांशु**

कुलपति

-निवेदक-

प्रो. प्रभात कुमार  
मुख्य संयोजक

प्रो. सुनील कुमार  
कुलसचिव

## विश्वविद्यालय परिचय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना लॉर्ड मैकाले की विध्वंसकारी शिक्षा पद्धति के विरोध में तथा भारतीय गुरुकुल शिक्षा पद्धति की पुनःस्थापना के साथ-साथ वैदिक ज्ञानपरम्परा के संरक्षण एवं विश्वगुरु भारत के निर्माण के पुनीत उद्देश्य के साथ की गयी थी। 121 वर्ष पूर्व स्थापित यह देश का प्रथम गैर-ब्रिटिश विश्वविद्यालय था, जिसे प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालयों (कलकत्ता, मद्रास एवं बॉम्बे) और लाहौर में पञ्जाब विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद स्थापित किया गया था। गुरु-शिष्य परम्परा, अध्यात्म, तप, त्याग, संयम, श्रम एवं समर्पण पर आधृत गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना प्राचीन और अर्वाचीन विद्याओं के समेकित और समावेशी प्रयोग के कारण अभिनव दृष्टि से सम्पन्न थी। यह देश का प्रथम विश्वविद्यालय था, जिसे शासकीय प्रश्रय की उपेक्षा कर जनता द्वारा दिए गए दान के द्वारा स्थापित किया गया था। वैदिक शिक्षा दर्शन पर आधृत यह विश्वविद्यालय पारम्परिक और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के शिक्षण और शोध का प्रसिद्ध केन्द्र है। गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना महर्षि दयानन्द के शिष्य महान् संन्यासी, हिन्दू समाज सुधारक एवं भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के नायक अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी ने 04 मार्च, 1902 में हरिद्वार के पावन गंगा तट पर की थी। वैदिक ज्ञान विज्ञान एवं हिन्दी भाषा के प्रचार, समाज के सभी वर्गों में शिक्षा के प्रसार, स्वतन्त्रता आन्दोलन, हिन्दी पत्रकारिता, सामाजिक समरसता, धर्मान्तरण अवरोध, शुद्धि आन्दोलन तथा सामाजिक कुरीति उन्मूलन आदि के क्षेत्र में इस संस्थान का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय अवदानों को रेखांकित करते हुए भारत सरकार ने इसे 1962 में डीम्ड विश्वविद्यालय की मान्यता प्रदान की थी। यह भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर और भारतीय कृषि संस्थान पूसा, दिल्ली के बाद इस मान्यता को प्राप्त करने वाला देश का तृतीय संस्थान है।

## संगोष्ठी की अवधारणा

स्वतन्त्रता के अमृत काल एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती के पावन अवसर पर भारत सम्पूर्ण मानव जाति को अमर सन्देश प्रदान करने वाली वैदिक संस्कृति, सभ्यता एवं ज्ञान विज्ञान की ओर अग्रसर हो रहा है। यह सभी भारतीयों के लिए गौरव एवं हर्ष का विषय है। भारत के स्वर्णिम वैभव एवं स्वतन्त्रता के लिए जिन सन्तों, महापुरुषों, स्वतन्त्रता सेनानियों एवं नेताओं ने मातृभूमि के श्रीचरणों में अपना सर्वस्व समर्पित किया है, उनमें आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का नाम अन्यतम है। सर्वप्रथम उन्होंने "कोई कितना भी करे, स्वदेशी शासन उससे श्रेष्ठ होता है" कहकर विदेशी शासन से विदलित भारतीयों को स्वतन्त्रता के लिए प्रेरित किया। उन्होंने आर्षज्ञान, स्वधर्म, स्वदेश एवं स्वसंस्कृति की पुनः स्थापना के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन आहूत किया। वैदिक ज्ञान के विशुद्ध स्वरूप का प्रसार करना, एकेश्वरवाद, वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता के यथार्थ स्वरूप की स्थापना करना, सशक्त एवं समृद्ध राष्ट्र का निर्माण कर सामाजिक सौहार्द तथा विश्वबन्धुत्व की स्थापना करना तथा विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त अन्धविश्वास, कुरीतियों एवं जाति प्रथा का उन्मूलन करना महर्षि दयानन्द सरस्वती के शाश्वत कार्य हैं। महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती के अवसर पर वैदिक ज्ञान, संस्कृति एवं सभ्यता के रहस्यों को उजागर करने हेतु गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार में वेद-विज्ञान एवं संस्कृति महाकुम्भ का आयोजन कर रहा है।

2023 एक ऐतिहासिक वर्ष है, क्योंकि यह वर्ष महर्षि दयानन्द जी का २००वीं जयन्ती वर्ष है। महर्षि दयानन्द का जयन्तीवर्ष भारत सहित सम्पूर्ण विश्व के लिए एक प्रेरणाप्रद वर्ष है। स्वामी दयानन्द जी का "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अर्थात् सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाओ' उद्घोष श्रेष्ठ, सभ्य एवं भव्य विश्व के निर्माण के लिए हमें सतत प्रेरित करता है। आज विश्व को मानवतावादी तथा नैतिक दृढ़ता से सम्पन्न दृष्टि की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का कथन है कि "जब दुनिया २१वीं सदी में विविध प्रकार के विवादों, हिंसा और अस्थिरता से घिरी हुई है तो महर्षि दयानन्द जी द्वारा दिखाया गया मार्ग भारत और दुनिया के लोगों में आशा जगाता है", हमारे अन्दर महर्षि दयानन्द की वैदिक परम्परा के प्रति गौरव और ऊर्जा का संचार

करता है। वर्तमान में अपने ज्ञान-विज्ञान, संस्कृति, संस्कार एवं शाश्वत जीवन मूल्यों के प्रचार-प्रसार की महती आवश्यकता है। भारतीय ज्ञानपरम्परा और वैदिक शिक्षा दर्शन विशिष्ट कौशल के विकास की अपेक्षा समग्र व्यक्तित्व का विकास कर युवा छात्रों को ज्ञान और चरित्र-निर्माण की ओर अग्रसर करता है।

महर्षि दयानन्द जी की २००वीं जयन्ती को एक भव्य उत्सव के रूप में मनाने के भारत सरकार के सराहनीय प्रयास को सार्थक करने के लिए गुरुकुल काँगड़ी समविश्वविद्यालय इस अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। जिसमें वैदिक विज्ञान एवं भारतीय संस्कृति की विभिन्न धाराओं के विद्वान्, आचार्य और बुद्धिजीवी इस ज्ञान परम्परा एवं संस्कृति को पुनर्जीवित करने के साधनों और अनुप्रयोगों पर चर्चा के साथ-साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती के इस क्षेत्र में योगदान पर गहन मन्थन करेंगे।

यह संगोष्ठी शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और बुद्धिजीवियों को वैदिक ज्ञान विज्ञान एवं वैदिक संस्कृति से सम्बन्धित अपने शोधपत्र प्रस्तुत करने और अपने शोध के परिणामों पर चर्चा करने के लिए एक मञ्च प्रदान करेगी। इस संगोष्ठी का उद्देश्य युवाओं को प्राचीन ज्ञानपरम्पराओं, सांस्कृतिक प्रथाओं एवं मूल्यों के वैज्ञानिक पक्षों से अवगत कराना है। एतद् अतिरिक्त संगोष्ठी के माध्यम से स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रदूत, भारतीय नवजागरण के पुरोधा एवं वेदों के पुनरुद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती की अनेक विश्व कल्याणकारी सिद्धान्तों एवं उनके सामाजिक, राजनैतिक एवं राष्ट्रीय नवजागरण के लिए किए गए कार्यों एवं योग्यताओं को समझने का अवसर प्राप्त होगा।

जिन विद्याओं और कलाओं के कारण भारत ने विश्वगुरु के पद को समलंकृत किया, उन विद्याओं और कलाओं के विषय में भी इस संगोष्ठी में विस्तृत विचार-विमर्श होगा। वेद प्रतिपादित जीवन मूल्य विश्व की वर्तमानकालीन आतंकवाद एवं पर्यावरण आदि अनेक समस्याओं के समाधान में सक्षम हैं, इन विषयों पर भी इस संगोष्ठी में विचार विमर्श किया जायेगा।

## विषय

प्राचीन भारतीय आचार्यों ने वैज्ञानिक लेखन के माध्यम से उत्कृष्ट ज्ञान की स्थापना की है तथा अध्यात्म विज्ञान, खगोल विज्ञान, आयुर्विज्ञान, गणितविद्या, त्रिकोणमिति, ज्योतिर्विज्ञान, शिल्पविद्या, सृष्टि विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, मनोविज्ञान आदि अनेक क्षेत्रों में अनुपम योगदान दिया है। वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, वेदांग, दर्शनशास्त्र आदि में गहन और अतुलनीय ज्ञान है। विभिन्न शास्त्रों उपर्युक्त विषयों के गूढ़ अर्थों को गहराई से पढ़ने और ध्यान से समझने की आवश्यकता है।

भारतीय शाश्वत एवं सार्वभौम ज्ञानपरम्परा की महत्ता से संसार का बुद्धिजीवी वर्ग परिचित हो सके, इसके प्रचार-प्रसार के लिए यत्नवान् होने की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। आज विश्व विकास के पश्चिमी मॉडल की खामियों और सीमाओं को अनुभव कर रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) २०२० भी भारतीय ज्ञानपरम्परा पर केन्द्रित है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र में भारतीय ज्ञान परम्परा को सम्मिलित किया गया है। २१वीं सदी की विभिन्न चुनौतियों का समाधान करने के लिए भारतीय ज्ञानपरम्परा पर आधृत शिक्षण और अनुसन्धान को बढ़ावा देने पर नई दृष्टि से ध्यान केन्द्रित किया गया है। इसलिए युवा विद्वानों को भारतीय ज्ञानपरम्परा के क्षेत्र में अनुसन्धान करने के लिए प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन के लिए यह संगोष्ठी आयोजित की जा रही है। सम्पूर्ण संगोष्ठी निम्नलिखित उपविषयों पर केन्द्रित रहेगी-

1. वेदों एवं भारतीय वाङ्मय में विविध विज्ञान
2. महर्षि दयानन्द सरस्वती का विश्व को अवदान
3. वसुधैव कुटुम्बकम् एवं विश्वशान्ति का आधार भारतीय संस्कृति
4. भारतीय इतिहास का पुनर्लेखन
5. वैदिक शिक्षा दर्शन एवं राष्ट्रिय शिक्षा नीति

## वेदों एवं भारतीय वाङ्मय में विविध विज्ञान

- ज्ञान-विज्ञान का आदि संवाहक- विश्वगुरु भारत
- आध्यात्मिक विज्ञान
- भारतीय भौतिक विज्ञान
- भारतीय रसायन विज्ञान
- भारतीय गणित विज्ञान
- भारतीय सूक्ष्मजीवविज्ञान
- भारतीय धातु विज्ञान
- भारतीय कृषि विज्ञान
- भारतीय जीवन प्रबन्धन
- भारतीय आयुर्विज्ञान

शल्य चिकित्सा, कायचिकित्सा, पारम्परिक चिकित्सा पद्धतियां- प्राकृतिक चिकित्सा, यज्ञ चिकित्सा, यौगिक चिकित्सा, मर्म चिकित्सा आदि

- भारतीय योग विज्ञान
- भारतीय खगोल विज्ञान
- भारतीय पर्यावरण विज्ञान
- जलवायु परिवर्तन- वैदिक समाधान
- भारतीय ज्योतिर्विज्ञान
- भारतीय जल एवं जलस्रोत संरक्षण विज्ञान
- भारतीय सृष्टि उत्पत्ति विज्ञान
- भारतीय स्थापत्य विज्ञान
- भारतीय विज्ञान तथा संस्थिरता
- वैदिक मनोविज्ञान तथा आधुनिक मनोविज्ञान
- भारतीय विमान विज्ञान
- भारतीय आभियान्त्रिकी एवं शिल्प विज्ञान
- वैदिक सामाजिक विज्ञान
- वैदिक राजनीति विज्ञान

## महर्षि दयानन्द का विश्व को अवदान

- महर्षि दयानन्द के साहित्य में विविध विज्ञान
- वेदभाष्य एवं महर्षि दयानन्द
- भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण के पुरोध- महर्षि दयानन्द
- भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं महर्षि दयानन्द
- धर्म एवं महर्षि दयानन्द
- नारी शिक्षा एवं महर्षि दयानन्द
- महर्षि दयानन्द का राजनैतिक चिन्तन
- महर्षि दयानन्द का सामाजिक चिन्तन
- महर्षि दयानन्द का आर्थिक दृष्टिकोण

- महर्षि दयानन्द का दार्शनिक दृष्टिकोण
- महर्षि दयानन्द की शिष्य परम्परा, आर्य समाज एवं राष्ट्रोत्थान
- वैदिक यज्ञों के वैज्ञानिक आयाम एवं विश्व कल्याण साधकत्व
- भारतीय वाङ्मय में वसुधैव कुटुम्बकम् के सूत्र
- भारतीय दार्शनिक परम्परा
- भारतीय गन्धर्व वेद एवं इसके वैज्ञानिक आयाम- (संगीत, वादन एवं नृत्य की)
- भारतीय रंगमञ्च एवं नाट्य
- भारतीय भाषाओं एवं साहित्य ( संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, ओडिया, मराठी, पंजाबी, तमिल आदि) में प्रतिबिम्बित भारतीय संस्कृति के विविध पक्ष
- भारतीय संस्कृतिक परम्पराओं और उत्सवों का वैज्ञानिक महत्व
- भारतीय संस्कृति का सार्वभौम महत्त्व
- भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत
- वैदिक विज्ञान का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव
- वैश्विक आतंकवाद का वैदिक समाधान

### भारतीय इतिहास का पुनर्लेखन

- वेदों में इतिहास- एक समीक्षा
- आर्यों का आदिदेश
- भारतीय वाङ्मय के सन्दर्भ में मानव इतिहास का काल
- आर्यद्रविड- अंग्रेजों का षड्यन्त्र
- रामायण एवं महाभारत के ऐतिहासिक सन्दर्भ
- पुराणों के ऐतिहासिक सन्दर्भों का विवेचन
- अन्य भारतीय वाङ्मय में ऐतिहासिक तथ्यों का विवेचन
- भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन की आवश्यकता
- भारत का वास्तविक इतिहास लेखन में गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय का योगदान

### भारतीय शिक्षा दर्शन एवं राष्ट्रीय शिक्षानीति-2020

- वेदों में शिक्षा का स्वरूप एवं उद्देश्य
- गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति
- भारत के प्राचीन गुरुकुल एवं विश्वविद्यालय
- भव्य भारत का निर्माण एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020

## विशिष्ट वक्तागण

विख्यात शिक्षाविद्, नीति निर्माता, शोध अध्येता, अधिकारी राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभाग करेंगे।

## समय सीमा

राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए मौलिक शोधपत्र/सैद्धान्तिक शोधपत्र और केस स्टडीज़ विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के प्राध्यापकों और छात्रों से आमन्त्रित किए जाते हैं।

## महत्त्वपूर्ण तिथियाँ

शोधपत्र सारांश जमा करने की अन्तिम तिथि - 30 November, 2023

शोधपत्र सारांश विषयक सूचना-संचार की अन्तिम तिथि - 05 December, 2023

शोधपत्र सारांश ऑनलाइन माध्यम से Docx/PDF फ़ाइल फॉर्मेट में जमा किया जाएगा।

## प्रतिभागिता शुल्क

संगोष्ठी प्रतिभागिता शुल्क का विवरण नीचे दिया गया है। प्रतिभागिता शुल्क के अन्तर्गत संगोष्ठी किट, लेखनी और पैड, संगोष्ठी विवरणिका, त्रिदिवसीय कार्यक्रम और सूक्ष्म जलपान/भोजन सम्मिलित होगा। संगोष्ठी आयोजन समिति अतिथि गृहों/ होटल/धर्मशाला आदि में रुकने के लिए छूट की दरों पर आवास व्यवस्था हेतु संवादरत हैं। जिसके बारे में विस्तृत सूचना शीघ्र ही विश्वविद्यालय वेबसाईट ( <https://www.gkv.ac.in/vvsmahakumbh/> ) पर प्रसारित की जाएगी।

Website: <https://www.gkv.ac.in/vvsmahakumbh/>

## संगोष्ठी प्रकाशन

चयनित और समीक्षित शोधपत्र आईएसबीएन नम्बर युक्त सम्पादित ग्रन्थ में प्रकाशित किए जायेंगे। मौलिक शोधपत्र प्रकाशन हेतु जमा किए जा सकते हैं, उल्लेखनीय है कि शोधपत्र की शब्द सीमा 5000 शब्दों से अधिक नहीं होनी चाहिए। शोधपत्र प्रकाशन और जमा करने की नियमावली की विस्तृत सूचना संगोष्ठी के समय अधिसूचित की जाएगी।

## संगोष्ठी स्थल

मुख्य परिसर, गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

संगोष्ठी सम्बन्धी किसी भी प्रकार की जानकारी और सहायता के लिए निःसंकोच सम्पर्क करें



गुरुकुल काँगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

वेबसाइट: <https://www.gkv.ac.in/vvsmahakumbh/>

## राष्ट्रीय सलाहकार समिति

1. प्रो०कपिल कुमार, पद्मभूषण, जे०एन०यू०, नई दिल्ली
2. प्रो० बी०आर० शर्मा, कुलपति, श्री श्री रविशंकर विश्वविद्यालय, उड़ीसा
3. प्रो० एस०वी०एस० राणा, पूर्व कुलपति, बी०यू० झांसी
4. प्रो० के०पी० सिंह, कुलपति, एम०जे०पी० रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली
5. प्रो० एच०एस० सिंह, कुलपति, माँ शाकुम्भरी स्टेट विश्वविद्यालय, सहारनपुर
6. प्रो० महावीर अग्रवाल, पूर्व कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार
7. प्रो० श्रीनिवास बरखेड़ी, कुलपति, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
8. प्रो० योगेश सिंह, कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय
9. प्रो० पूर्णिमा नौटियाल, कुलपति, हे०न०ब०ग० केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर
10. प्रो० सुरेखा डंगवाल, कुलपति, दून विश्वविद्यालय, देहरादून
11. प्रो० ओ०पी०एस० नेगी, कुलपति, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी
12. डॉ. अरुण कुमार त्रिपाठी, कुलपति, उत्तराखण्ड आयुर्वेद विश्वविद्यालय, देहरादून
13. प्रो. मीनू सिंह, डायरेक्टर, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश
14. प्रो. शरद पारधी, कुलपति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुञ्ज, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
15. डॉ. रेणु सिंह, डायरेक्टर, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून
16. डॉ. मनमोहन सिंह चौहान, कुलपति, गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर, उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड
17. डॉ. वी.के. सारस्वत, कुलपति, ग्रेफिक एरा पर्वतीय विश्वविद्यालय, क्लेमेंट टाऊन, देहरादून
18. प्रो. जी. रघुरामा, कुलपति, डी.आई.टी. यूनिवर्सिटी, मसूरी रोड़, देहरादून (उत्तराखण्ड)
19. डॉ. राजेन्द्र डोभाल, कुलपति, स्वामी रामा हिमालयन यूनिवर्सिटी, जौली ग्रान्ट, देहरादून (उत्तराखण्ड)
20. प्रो. एन.के. जोशी, कुलपति, श्री देव सुमन उत्तराखण्ड यूनिवर्सिटी, बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)
21. प्रो. यशवीर देवान, कुलपति, श्री गुरु राम राय यूनिवर्सिटी, पटेल नगर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
22. प्रो० संगीता शुक्ला, कुलपति, चौ०च०सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
23. प्रो० के०एन० जोशी, कुलपति, कुमाऊँविश्वविद्यालय, नैनीताल
24. प्रो० दिनेश चन्द्र शास्त्री, कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार
25. प्रो० आर०के० शर्मा, कुलपति, जेपी यूनिवर्सिटी ऑफ इन्फोरमेशन टेक्नोलॉजी, सोलन

26. प्रो० वाचस्पति मिश्र, पूर्व अध्यक्ष, यूपी संस्कृत संस्थान, लखनऊ
27. प्रो० सुरेन्द्र कुमार, पूर्व कुलपति, गुरुकुल काँगड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार
28. प्रो० रमेश भारद्वाज, कुलपति, वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल
29. प्रो० शशि प्रभा कुमार, अध्यक्ष, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज सोसायटी, शिमला
30. प्रो० आर०सी० डिमरी, डायरेक्टर, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ जियोमैग्नेटिज्म, मुम्बई
31. प्रो० सचिन माहेश्वरी, नेताजी सुभाष यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी (एन०एस०यू०टी०), नई दिल्ली
32. प्रो० नरेन्द्र शर्मा, कुलपति, मदरहुड यूनिवर्सिटी, रुड़की
33. प्रो० कमलेश कुमार छ० चौकसी, डायरेक्टर स्कूल ऑफ लैंग्वेज, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद
34. प्रो० प्रदीप के. रामचालरा, डायरेक्टर, CSIR, CBRI, Roorkee
35. प्रो० रामनाथ झा, जे०एन०यू०, नई दिल्ली
36. प्रो० आर०एम० मेहरा, दिल्ली विश्वविद्यालय
37. प्रो० नरेश पाधा, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू
38. प्रो० सुरेन्द्र कुमार, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक
39. प्रो० ओमनाथ बिमली, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
40. प्रो० पी०एन० गज्जर, गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

## सम्पर्क सूत्र

1. प्रो० प्रभात कुमार, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व संग्रहालय (9319022000)
2. प्रो० ब्रह्मदेव, संस्कृत विभाग (9412307123)
3. प्रो० नवनीत, वनस्पति एवं सूक्ष्म जीवविज्ञान विभाग (7300761327)
4. प्रो० डी०एस० मलिक, जन्तु एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग (7300761220)
5. प्रो० नमिता जोशी, जन्तु एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग (9410559821)
6. प्रो० देवेन्द्र कुमार गुप्ता, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व संग्रहालय (9897902653)
7. प्रो० रेणु शुक्ला, प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग (8266074170)
8. प्रो० सुचित्रा मलिक, हिन्दी विभाग (9411731310)
9. प्रो० एल०पी० पुरोहित, भौतिकी विभाग (7300761217)
10. प्रो० विवेक कुमार गुप्ता, कम्प्यूटर विज्ञान विभाग (9837202304)
11. प्रो० विनय विद्यालंकार, संस्कृत विभाग (7906725688)
12. प्रो० सुरेन्द्र कुमार त्यागी, योग विज्ञान विभाग (9897173154)
13. डॉ० एम०एम० तिवारी, अनुप्रयुक्त विज्ञान विभाग (7300761332)
14. डॉ० आर०के० शुक्ला, रसायन विभाग (7300761332)
15. डॉ० गगन माटा, जन्तु एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग (9897161345)
16. डॉ० हरेन्द्र कुमार, गणित विभाग (7983395737)